भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं
जौ अनुसंधान संस्थान करनाल, हरियाणा
द्वारा विकसित

(डी.डब्ल्यू.आर.बी.-137)

जौ की छः पंक्ति वाली उच्च उत्पादन व रतुआ रोगरोधी किस्म

अनुशंसित क्षेत्र :— उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र, मध्य क्षेत्र, उत्तर पश्चमी मैदानी क्षेत्र : पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, जम्मू – कश्मीर (जम्मू और कठुआ जिला), हिमाँचल प्रदेश (उना जिला और पोंनटा घाटी), उत्तराखड़ के तराई क्षेत्र, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, असम और ओडीशा, मध्य प्रदेश, गुजरात व छत्तीसगढ़ ।

विशेषताएँ

क्र. सं.	विशेषताएँ	मध्य क्षेत्र	उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र	उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र
1	उपज (क्विंटल/हे.)	42.89	37.93	52.20
2	पोध की लम्बाई (सेंमी)	89	88	94
3	बाली आने की अवधि (दिन)	69	74	82
4	पकने की अवधि (दिन)	113	114	127
5	हजार दानो का भार (ग्राम)	47.0	40.37	47
6	दानो मे प्रोटीन की मात्रा (प्रतिशत में)	12.7	11.0	10.14

डी.डब्ल्यू.आर.बी.–137 जौ की किस्म सिंचित दशाओ में समय से बुआई के लिए उपयुक्त मानी जाती है डी. डब्ल्यू.आर.बी.–137 की बालिया सीधी, पीलापन लिए हुई हरी तथा सघन होती है एवं इसके दाने पीले और मोटे होते है ।

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं
जौ अनुसंधान संस्थान करनाल, हरियाणा
द्वारा विकसित

मध्य भारत में गेहूँ का बीज उत्पादन

प्रजनक बीज → आधारीय बीज → प्रमाणित बीज →

प्रजातियों का चयनः कृषि जलवायु क्षेत्र और बुवाई की स्थिति के आधार पर नवीनतम् अच्छी उपज देने वाली किस्मों का चयन।

मध्य क्षेत्र के लिए उपयुक्त गेहूँ की किस्मे :

1. **सिंचित समय से बुवाई**— डी.बी.डब्ल्यू.–187 (करण वंदना), एच.आई.–1636, जी.डब्ल्यू.–513, जी.डब्ल्यू. 366, कठिया–एच.आई. –8759, पूसा तेजस, एच.आई.–8713 (पूसा मंगल)
2. **सिंचित देर से बुवाई** – राज–4238, सी.जी.–3029, एच.आई.–1634 (पूसा अहिल्या), एमपी–3336
3. **प्रतिबंधित सिंचाई समय से बुवाई**— डी.बी.डब्ल्यू.–110, एमपी–3228, कठिया– डीडीडब्ल्यू–47, यूएएस–466, एचआई–8823 (पूसा प्रभात)।

बुवाई का समयः गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन के लिए सभी किस्मो की समय पर बुवाई करना लाभ प्रद होता है । (5 से 15 नवम्बर)

बीज दरः

समय से बुवाई की स्थिति मे— 40 किलो प्रति एकड़
पछेती बुवाई की स्थिति मे — 50 किलो प्रति एकड़

प्रथकरण दूरीः

एक किस्म से दुसरे किस्म की दूरी — 3 मीटर
अनावृत कण्ड से ग्रासित खेत की दूरी —150 मीटर

अवांछनीय पौधो को निकालना (रोंगिग) :— बीज फसल मे अन्य किस्मो एंव रोगग्रस्त अथवा अवांछनीय पौधो को निकालना रोंगिग कहलाता है। अवांछनीय पौधो को निकालने का कार्य बाली आने से पूर्व एवं बाद में करना चाहिए।

सिंचाईः अच्छा बीज उत्पादन करने के लिये फसल के विभिन्न अवस्था मे सामान्यता 4 से 5 सिंचाई करना चहिये ।

उर्वरक की मात्राः नाइट्रोजन–48 किलो प्रति एकड, फास्फोरस–24किलो प्रति एकड़, तथा पोटाश–16किलो प्रति एकड ।

खरपतवार निन्यत्रणः—

मुख्य खरपतवार	खरपतवार नाशक	उत्पाद (मात्रा प्रति एकड़)	समय
सकरी पत्ती	सल्फोसल्फूरान अथवा आंयसोप्रोट्रोरान	13 ग्राम 500 ग्राम	30–35 दिन बुवाई के बाद
चौड़ी पत्ती	2-4 डी(38 ई.सी.) मेटसल्फ्यूरान	500 मि.ली. 8 ग्राम	30–35 दिन बुवाई के बाद
सकरी और चौड़ी पत्ती	पेंडी मिथिलिन	1250 मि.ली.	बुवाई के 03 दिन तक

यह खरपतवार नाशको को 120–150 लीटर पानी मे प्रति एकड़ घोल बनाकर छिडकाव करना है।

• **रोग प्रबन्धन :**— (1) अनावृत कण्ड/कान्गियारी – यह एक बीज जनित रोग है। इसकी रोकथाम के लिये विटावैक्स/कार्बोकसिन (75 WP) 2.5 ग्रा./प्रति कि.ग्रा. बीज या टेबुकोनाज़ोल (2 डी. एस.) की 1.0 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से प्रयोग करे।

(2) करनाल बन्ट— इसके रोकथाम के लिये प्रोपीकोनाजोल 25 ई.सी. @ 0.1% का 200 ली. पानी मे घोल बनाकर दो छिडकाव बाली निकलते समय 15 दिनो के अंतराल पर प्रयोग करे।

(3) रतुआ— इसके रोकथाम के लिये प्रोपीकोनाजोल 25 ई.सी. या टेबुकोनाज़ोल 25 ई.सी. @ 0.1% का घोल बनाकर 15 दिनो के अंतराल पर छिडकाव करे।

कटाई एंव गहाई :— गेहूँ की बालियो मे दानो के पकने पर ये सुख कर मुड जाते है। इस अवस्था मे तुरन्त कटाई कर ले। ध्यान दे इस समय बालियो के दानो मे नमी @ 12–14% होनी चहिये। कम्बाईन हार्वेस्टर का प्रयोग करने से पहले उसकी सफाई कर ले।

बीज प्रसंस्करण और भंडारण :— भंडारण के लिये 10–11% नमी होनी चहिये। तथा धूमन के लिये एल्युमिनियम फास्फाइड @3 ग्राम/टन बीज के हिसाब से प्रयोग करे।

बीज उपज (शुद्ध बीज) :— 18–22 क्विंटल प्रति एकड़।

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गेहूँ एवं
जौ अनुसंधान संस्थान करनाल, हरियाणा
द्वारा विकसित

डी.डी.डब्ल्यू.–47 (कठिया गेहूँ)

समय पर बुवाई और प्रतिबंधित सिंचाई हेतु जैव पोषित गेहूं की किस्म

अनुशंसित क्षेत्र

मध्य प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, राजस्थान के कोटा और उदयपुर मंडल और यूपी का झांसी मंडल।

विशेषताएँ

1. औसत उपज : 37.3 क्विंटल/हे.
2. उपज क्षमता : 74.1क्विंटल / हे.
3. उच्च पीला वर्णक की मात्रा : 7.57 पीपीएम
4. दानो में प्रोटीन की मात्रा : 12.69%
5. बाली आने की अवधि : 74दिन
6. पकने की अवधि : 121दिन
7. पौध की ऊँचाई : 84(सेमी)
8. हजार दानो का भार : 38ग्राम
9. दानो मेंआयरन की मात्रा : 14.1 (भाग प्रति मिलियन)

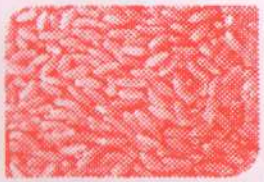

इस किस्म में अधिक तापक्रम तथा सुखा सहन की क्षमता होती हैं तथा यह किस्म पास्ता, दलिया और सूजी बनाने के लिए अच्छी है इसमें बीटा कैरोटिन की मात्रा ज्यादा और काले व भूरे रतुआ रोग के प्रति सहनशील हैं ।

* प्रकाशक *

कृषि विज्ञान केन्द्र, उज्जैन (म.प्र.)

(राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर)

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गेहूँ एवं
जौ अनुसंधान संस्थान करनाल, हरियाणा
द्वारा विकसित

करण वंदना (डी.बी.डब्ल्यू.–187)

**जैव पोषित, रोग प्रतिरोधी, अधिक उपज,
सिंचित अगेती और समय पर बुवाई वाली गेहूं की किस्म**

अनुशंसित क्षेत्र :– उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र, मध्य क्षेत्र, उत्तर पश्चमी मैदानी क्षेत्र : पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, जम्मू – कश्मीर (जम्मू और कठुआ जिला), हिमाँचल प्रदेश (उना और पोंनटा घाटी), उत्तराखड़ के तराई क्षेत्र, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, असाम, ओडीशा, मध्य प्रदेश, गुजरात व छत्तीसगढ़।

क्र. सं.	विशेषताएं	उत्तर पश्चमी मैदानी क्षेत्र अगेती बुवाई	उत्तर पश्चमी मैदानी क्षेत्र समय पर बुवाई	उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र समय पर बुवाई	मध्य क्षेत्र अगेती बुवाई
1	औसत उपज (क्विंटल / हे.)	75.2	61.3	48.8	60.30
2	उपज क्षमता (क्विंटल / हे.)	96.6	72.1	64.7	75.4
3	पौध की ऊँचाई (सेंमी)	100	103	100	87.0
4	बाली आने की अवधि (दिन)	103	88	77	71.0
5	पकने की अवधि (दिन)	158	146	120	124.0
6	हजार दानो का भार (ग्राम)	47	45	41	45.0
7	रतुआ रोग से प्रतिरोधी	पीले और भूरे रतुआ से रोग प्रतिरोधी			
8	गुणवत्ता लक्षण	चपाती की गुणवत्ता (7.7), उच्च आयरन (43.1 भाग प्रति मिलियन)			

अगेती बुवाई के लिये विशेष सस्य प्रबंधनः

संस्तुत उर्वरको की 150% मात्रा के साथ–साथ 15 टन / हे. के दर से गोबर की खाद का प्रयोग करना चहिये। क्लोर्मेक्वेट क्लोराइड / 0.2% के साथ टेबुकोनाजोल / 0.1% की दर से 200 ली० पानी मे घोलकर पहली गांठ बनते समय एवं दूसरा छिड़काव झंडा पत्ती निकलने की अवस्था में दो बार छिडकाव करने से पौधे का अधिक फुटाव के साथ–साथ तने मजबुत होते है और उत्पादन भी अच्छा होता है।